राज कुमार हिरानी के सिनेमा में सामाजिक सरोकार

डॉ. उमेश चंद्र पाठक
विभागाध्यक्ष, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, MAIMS

राजकुमार हिरानी की फिल्मों में हमेशा कोई न कोई सामाजिक सरोकार का मुद्दा उठाया जाता है। समाज के अंदर और हमारे आसपास घटने वाली घटनाओं में बहुत सारी ऐसी घटनाएं होती हैं जो मानवीय पहलुओं को छू जाती हैं और साथ ही बरसों से चले आ रहे टैबू के कारण भी कुछ घटनाएं होती रहती हैं। परम्परा आस्था विश्वास और धर्म के साथ विज्ञान और तकनीक भी हमारे जीवन का अंग है। श्री हीरानी की फिल्मों में इन मुद्दों को उठाया गया है। इन्हें बड़े ही रोचक और करारे व्यंग्य तथा कथोपकथन के माध्यम से और स्थितियों परिस्थितियों के द्वारा इनका प्रस्तुतीकरण किया गया है। उनका यह तरीका खासा लोकप्रिय साबित हुआ है। इस प्रक्रिया में वे एक सफल निर्देशक और 21वीं सदी के पहले दो डेढ़ दशकों में सामाजिक सरोकारों को उठाने वाले फिल्मकार के रूप में सामने आए हैं। उनकी फिल्में बॉक्स आफिस पर भी काफी सफल रही हैं वहीं दर्शकों को कहीं गहराई तक छू जाने वाली साबित हुई हैं।

प्रस्तुत शोध में श्री हिरानी की तीन प्रमुख फिल्मों मुन्ना भाई एम बी बी एस, और उसके शीक्वेल लगे रहो मुन्ना भाई, थ्री इडियटस और पी के के सामाजिक सरोकारों का विश्लेषण किया गया है। इन तीनों ही फिल्मों की एक विशेषता यह रही है कि वे मनोरंजन के साथ–साथ बेहद प्रभावकारी तरीके से विभिन्न मुद्दों को उठाने और संदेश देने में तीनों ही फिल्में सशक्त साबित हुई हैं। कहना न होगा कि इन्हीं कारणों से व्यावसायिक रूप से भी इन फिल्मों ने आशातीत सफलता हासिल की है। फिल्म संचार का एक प्रभावकारी माध्यम है। हर माध्यम का एक सामाजिक सरोकार होता है और होना भी चाहिए। वह मात्र उत्पाद यानी प्रोडक्ट नहीं होता। सिनेमा एक ऐसा सशक्त माध्यम है जिसका समाज के विभिन्न पहलुओं पर पर्याप्त असर होता है। वह समाज से प्रभावित होता है और समाज को प्रभावित करने की दूरगामी क्षमता रखता है। यही नहीं खान–पान, रहन–सहन, स्टाइल, बोलचाल, जीवन–शैली भाषा और जीवन के प्रदर्शित अर्थ को भी समाज अपनी क्षमता के अनुसार ग्रहण करता है। उनको आत्मसात करता है और अनुकरण करता है।

मुन्ना भाई एम बी बी एस राज कुमार हिरानी की ऐसी फिल्म है, जो समाज के कई मुद्दों पर न केवल करारा व्यंग्य करती है बल्कि व्यवस्था में नयी संभावना और सुधार की आवश्यकता की वकालत भी करती है। मुन्ना भाई एमबीबीएस का नायक मुरली मेडिकल के क्षेत्र में हो रहे घोर व्यावसायीकरण को नापसंद करता है। और व्यवसाय को मानवीय पहलू से जोड़ने की पहल करता है। फिल्म में ''जादू की झप्पी'' ने पूरे हिंदुस्तान को प्रभावित किया है। एक चिकित्सक का कार्य सबसे पहले इंसान को इंसान समझने का है। फिर इलाज करना है।यहां तक की आम लोग भी इस प्रकार की झप्पी लेने और देने को बोलचाल में इस्तेमाल करने लगे थे। इसके माध्यम से यह संदेश देने का सफल प्रयास किया गया कि सकारात्मक सोच ओर मरीज के साथ थोड़ा सा अपनापन और प्यार उसे अपेक्षाकृत जल्दी स्वस्थ कर सकता है।कहा भी गया है कि स्वास्थ्य के लिए दवा और दुआ दोनों जरूरी हैं। भारतीय समाज में सिस्टम के भीतर तक जड़ जमाए भ्रष्टाचार को भी इस फिल्म में उकेरा गया है। मुरली बड़े ही नाटकीय ढंग से एमबीबीएस की सभी चरणों की परीक्षा सर्वोच्च अंकों से पास कर लेता है। डा0 भी बन जाता है। उससे साधारण डाक्टर की तरह इलाज कर पाना तो संभव नहीं था।

इस सन्दर्भ में उन क्वैक्स या छद्म रूप डाक्टरों का चरित्र भी उभर कर सामने आता है। उनके काम काज पर करारा व्यंग भी दिखाई देता है जो केवल दुकान के बाहर डाक्टर का बोर्ड लगा कर इलाज की सुविधा उपलब्ध कराने का प्रयास कर रहे हैं। उनसे मरीज ठीक हो या न हो उसकी जेब से अच्छीखासी रकम जरूर निकाल ली जाती है। गरीब मरीज को यह मान कर संतोष करना पड़ता है कि वह बड़े अस्पताल में आने वाले बोझ को उठा नहीं सकता। सरकारी अस्पताल जाने पर पूरे दिन की दिहाड़ी मारी जाती है।

संजय दत्त द्वारा प्रस्तुत चरित्र समाज में बढ़ रहे भ्रष्टाचार और दहशत को दर्शाता है। सत्य कहने की हिम्मत लगातार घटती जा रही है। अपमान और जान–माल और तथा कथित इज्जत बचाए रखने के भय से भारतीय समाज लगातार भीरू होता जा रहा है। मुन्ना भाई की सफलता के बाद श्री हिरानी ने इसका सीक्वेंस ''लगे रहो मुन्ना भाई'' के रूप में बनाया। इस फिल्म में हमारी भीरूता की मनोदशा को सफलतापूर्वक उजागर किया गया। समाज की इस मनोदशा का अच्छा इलाज राजकुमार हिरानी प्रस्तुत करते हैं जिसको फिल्म में ''गांधीगीरी'' का नाम दिया गया है। इस फिल्म का नायक गांधीगीरी करते–करते गांधी के आदर्शों को जीने लगता है। उसे वास्तविक मूल्यों का अहसास होने लगता है। इससे प्रभावित होकर वह मानवीय मूल्यों के प्रति समाज को जागृत करने की मुहिम छेड़ देता है। यह मुहिम रंग लाती भी दिखाई देती है लेकिन उसका एक सीमित प्रभाव ही दिखाई देता है। फिल्म का संदेश है कि इस मुहिम का व्यापक प्रभाव होना चाहिए और यह डुएबल है।

श्री हिरानी की थ्री इडियट्स आज की शिक्षा व्यवस्था पर करारा व्यंग ही नहीं करती उसकी असली स्थिति उजागर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। आज की शिक्षा व्यवस्था में रटंत का नाम ही शिक्षा रह गया है। इसमें ज्ञान और उसकी समग्रता या बच्चे की रूचि और विशेषज्ञता को कोई स्थान नहीं मिल पाता है। भारतीय समाज में पुरानी पीढ़ी अपनी आशांओं आकांक्षाओं को जो वो विभिन्न कारणों और परिस्थितियों में स्वयं पूरा नहीं कर पाते अपनी संतानों में पूरी होते देखना चाहते हैं। इस दौरान समय बदल चुका होता है और नयी पीढ़ी जरूरतें और सोच भी बदल चुकी होती है। आज का युवा जीवन को अपने नजरिए से देखता है। उसे अपने तरीके से जीना चाहता है। आधुनिक व्यवस्था में वह स्वयं की क्षमता से कुछ कर गुजरने का माद्दा रखता है। युवा वह करना चाहता है जो उसे पसंद है लेकिन सामाजिक पारिवारिक काकरणों से वह कई बार वह माता–पिता की कसौटियों पर खरा उतरने के रास्ते पर चल पड़ता है। परिवार और माता–पिता के भावनात्मक परिवेश में उसका लक्ष्य बदल जाता है। वह करना कुछ चाहता है और कुछ और करने के लिए मजबूर हो जाता है। इसके परिणाम और दुष्परिणाम दोनों सामने आते हैं। कई बार मनोबल टूटने या अनिच्छा के कारण वह सफल नहीं हो पाता। थ्री इडियट इस संदेश को बहुत ही सहज तरीके से प्रस्तुत कर पाने में सफल रही है। दूसरी ओर मनुष्य के प्राकृतिक गुणों का भी उल्लेख फिल्म में दिखता है। बगैर पृष्ठभूमि का सामान्य सा नायक अपनी मौलिक सोच और नैसर्गिक क्षमता के कारण एक सफल व्यक्तित्व के रूप में सामने आता है। जाहिर है कि व्यक्ति की मौलिक सोच ही उसे सर्वोच्च्व शिखर पर पहुचा सकती है।न कि अंधी दौड़ और बिना सोचे नकल करने की प्रवृत्ति।

यह फिल्म व्यावसायिक शिक्षा केन्द्रों में अनुशासन के नाम पर हो रही अमानवीय और अव्यवहारिक गतिविधियों को भी उजागर करती है। एक ओर प्रशासन विद्यार्थियों को नियंत्रण में रखने के स्ट्रिक्ट डिस्पिलन और परम्रागत तरीके से बच्चों को शिक्षित–प्रशिक्षित करने का प्रयास करते हैं तो दूसरी ओर छात्र अपने अपने तरीके से उसे सीखने समझने का प्रयास करते दिखते हैं। इससे परस्पर विरोधाभास की स्थिति उत्पन्न होती है। फिल्म में डीन के कैरेक्टर के माध्यम से निदेशक इन पहलुओं को उकेरने में सफल होता है। दूसरी ओर यह फिल्म महाविद्यालय स्तर पर रैगिंग जैसी जघन्य कृत्यों को भी उजागर करती है। किस तरह की पृष्टभूमि में भारतीय माता पिता अपनी संतानों को उंची शिक्षा दिला कर भविष्य संवारना चाहते हैं इस दशा का हिरानी ने अच्छा चित्रण किया है। फिल्म में राजू की मां बेटे और उसके दोस्तों को भोजन कराते समय जब यह संवाद कहती है कि मंहगाई देखो तो कितनी बढ़ गई है। पनीर तो लगता है आने वाले दिनों में प्लास्टिक की थैलियों में सोने की दुकान में मिलेगा। फिल्म में दृष्य को प्रभावी बनाने के लिए गरीबी के इस मार्मिक दृष्टि का चित्रण ब्लैक एंड हवाइट में किया गया है जो दृश्य और फिल्म दोनों को और भी प्रभावी बनाता है।

हमारे समाज में किसी भी परिस्थिति के लिए किसी अन्य को दोषारोपण करने की मौलिक परम्परा है। जिसका चित्रण हिरानी ने नायक माधवन के परिवार वालों के रूप में किया है जिसमें उसका पिता उसके फोटोग्राफी के शौक को उसकी इंजीनियरिंग की पढ़ाई के मार्ग में बाधा मानता है। बेटे के इस शौक के

दोष को उसके मित्रों पर मढ़ देता है। समान रूप से भारतीय परिवारों में अपनी संतानों की बिगड़ैल आदतों के लिए उनके मित्रों को जिम्मेदार ठहराना एक स्वस्थ परम्परा मानी जाती है। इसे हर परिवार और हर काल में आसानी से देखा जा सकता है। फिल्म अपने उद्देश्य और सामाजिक सरोकार में सफल प्रतीत होती है। समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए कोई न कोई संदेश इस फिल्म में दिखता है। शिक्षक, परिवार माता–पिता और दोस्त सभी की भूमिकाओं पर और विशेष रूप से उनकी सकारात्मक भूमिका पर प्रकाश डाला गया है। स्वस्थ समाज का विकास स्वस्थ विचारों से हो सकता है। यह फिल्म हमारे समाज की रूग्ण व्यवस्था की स्वास्थ्य की पड़ताल करती है।

श्री हिरानी की फिल्म ***पी के*** धर्म के विभिन्न पहलुओं की समीक्षा करती है। काल मार्कस ने कहा था कि धर्म एक अफीम की तरह है। दुनियां भर में धर्म के प्रति अंधी आस्था देखी जा सकती है। भारत में इसकी चरम स्थिति दिखाई देती है। हिरानी की फिल्म ***पी के*** की अंतरवस्तु धर्म ही है। फिल्म में विभिन्न धर्मों की जटिलताओं और उलझे हुए इंसान को मनोरंजक शैली में समझने और समझाने का प्रयास किया गया है। फिल्म के कथानक का सबसे रूचिकर पहलू यह है कि धर्म के नाम पर गंभीर प्रश्नों को कैसे हास्य में लिया जाता है और हास्यास्पद बातों को लेकर लोग अचानक गंभीर हो बैठते हैं। फिल्म का नायक एक अन्य ग्रह का प्राणी है लेकिन धर्म के नाम पर उसकी समस्या इस ग्रह के प्राणियों से कम नहीं हैं। विभिन्न धर्मों में ईश्वर का स्वरूप उनकी अवस्था ओर व्यवस्था देख कर वह बहुत संदेह की स्थिति में पहुंच जाता है।विभिन्न घटनाक्रमों के माध्यम से उसे यह पता चलता है कि दिक्कत धर्म में नहीं है बल्कि धर्म को धारण करने वाले उस मनुष्य में ही है जो अपने स्वार्थपूर्ण अनुष्ठानों को मौका देख कर धार्मिक अनुष्ठानों में तब्दील कर देता है। उसे कोई फर्क नहीं पड़ता की ऐसे अनुष्ठानों में कितने निर्दोष लोग स्वाहा हो गए हैं। स्वयं के आर्थिक आधारभूत ढ़ांचे को विस्तृत करना और उसी को धर्म के विकास के रूप में प्रचारित करना कुछ धार्मिक गुरूओं का एक मात्र उद्देश्य हो चला है। विभिन्न धर्मों के धर्मावलम्बियों को धर्म का वास्तविक मर्म समझना चाहिए। वास्तव में धर्म तो मानवता ही है। धर्म की आड़ में कुरीतियो को बढ़ावा नहीं देना चाहिए। धार्मिक उलेमाओं के विचारों का अंधानुकरण भी उचित नहीं कहा जा सकता है। सत्य और मानवता के अतिरिक्त कुछ भी धर्म नहीं हो सकता ऐसा लगभग सभी धर्म स्वीकार करते हैं। लेकिन उन्हें मानने और लागू करने वाले उनको अपने अपने तरीके से परिभाषित करते हैं जो कि विभिन्न समस्याओं के जन्म का कारण बन जाती है। भारतीय समाज में व्याप्त धार्मिक आडम्बर, कुरीतियों और कुप्रथाओं पर फिल्म कुठाराघात करती है और धर्म के सत्य तक पहुंचने का प्रयास करती है। फिल्म का नायक बार बार धर्म बदल कर एक जैसे ही धोखे खा कर इस निष्कर्ष तक पहुंचता है। धर्म के आडम्बर और सत्य के बीच के अंतरों को उजागर करता है और दोनों की पहचान कराता है।

फिल्म में समाजिक सरोकार के रूप में मीडिया की भूमिका पर भी प्रकाश डाला गया है। यहां भी आधुनिक धर्म की तरह केवल लाभ के सौदे की बात होती है। इस फिल्म में मीडिया की नुमाइंगी एक महिला पत्रकार कर रही होती हैं जिसकी उत्कट इच्छा उसे नायक की मदद करने के लिए प्रेरित करती है। कुल मिला कर फिल्म अपने सामाजिक सरोकार मे काफी हद तक सफल हुई है। राजकुमार हिरानी की इन फिल्मों के केन्द्र बिंदु में समाज है। समाज के विभिन्न वर्गों के चरित्रों से समाज से जुड़े प्रश्नों और व्यवस्था पर संदेश देने में वे एक सफल निर्देशक साबित हुए हैं। उनकी फिल्मों में तेजी के साथ परिवर्तित और विकसित हो रहा भारतीय समाज दिखता है जो आज भी दूसरी तरफ अपनी परम्पराओं और रूढ़ियों को पूरी करने में सफल नहीं हो पा रहा है।

सन्दर्भः

http://articles.economictimes.indiatimes.com/2009-12-25/news/27645655_1_idiots-rajkumar-hirani-sharman-joshi

http://indianexpress.com/article/entertainment/bollywood/munnabhai-3-will-be-made-for-

sure-just-waiting-for-sanjay-dutt-to-come-back-arshad-warsi/

http://www.epw.in/commentary/lage-raho-munna-bhai-unravelling-brand-gandhigiri.html

http://post.jagran.com/search/munna-bhai-mbbs

http://www.zimbio.com/Lage+Raho+Munna+Bhai/articles

http://www.mid-day.com/articles/rajkumar-hirani-learnt-of-gandhis-height-eight-years-after-lage-raho-munnabhai/15786163

http://www.mid-day.com/articles/pk---movie-review/15854155

http://timesofindia.indiatimes.com/entertainment/hindi/bollywood/PK-and-its-controversies/photostory/45729274.cms